डॉ· गजानन शंकर सुर्वे
एम·ए·,पीएच·डी·
रीडर एवं अध्यक्ष,हिन्दी विभाग
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा - 415 002 (महाराष्ट्र)

स्नातकोत्तर अध्यापक,हिन्दी
शोध निर्देशक,हिन्दी
सदस्य,अभ्यास मण्डल,हिन्दी
सदस्य,रिसर्च कमिटी,हिन्दी
शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर

191-बी, गुरुवार पेठ,
दोशी बिल्डिंग,
सातारा - 415 002
(महाराष्ट्र)

प्र मा ण प त्र

मैं डॉ·गजानन शंकर सुर्वे, रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा - यह प्रमाणित करता हूँ कि श्रीमती रूकसाना अ·मज्जीद शेख ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्·फिल्· हिन्दी उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध - "प्रयोगशील नाटककार : मणि मधुकर" मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। श्रीमती शेख के शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

(डॉ·गजानन शंकर सुर्वे)
शोध-निर्देशक के हस्ताक्षर

सातारा
दि·30 जून, 1994

Lal Bahadur Shastri College Satara

प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री
महाविद्यालय, सातारा

प्र स्था प न

प्रयोगशील नाटककार : मणि मधुकर

यह शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्·फिल्· हिन्दी के प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

सातारा·

दि·30 जून, 1994

(श्रीमती रूकसाना अ·मज्जीद शेख)

शोध-छात्रा के हस्ताक्षर

मणि मधुकर

प्रयोगशील नाटककार : मणि मधुकर

प्रा क्क थ न

साठोत्तरी हिन्दी नाट्य साहित्य में जिन नाटककारों ने अपनी मौलिक प्रतिभा के बल पर साहित्य और रंगमंच में क्रांतिकारी स्थितियाँ उत्पन्न की हैं, उनमें मणि मधुकर का नाम अग्रगण्य है। बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कलाकार मणि मधुकर ने नाटक और रंगमंच के अतिरिक्त उपन्यास, कहानी, कविता आदि साहित्य के अन्य अंगों में भी अपना मौलिक योगदान दिया है। परंतु वे अपने आपको मूलतः एक नाटककार ही मानते हैं और हिन्दी साहित्य में उनकी प्रसिद्धी भी उनके नाटकों के कारण ही है।

मधुकर अपने नाटकों में हमेशा प्रयोगशील रहे हैं। स्वातंत्र्योत्तर काल में अनेक हिन्दी नाटककारों ने मानव जीवन की विभिन्न असंगतियों को प्रस्तुत करने के लिए पाश्चात्य ऐब्सर्ड नाट्य-शिल्प का प्रयोग किया है। परंतु मणि मधुकर की यह विशेषता है कि उन्होंने अपने नाटकों में ऐब्सर्ड नाट्य-शिल्प के साथ यथार्थवादी, फैंटेसी, प्रतीकात्मक तथा लोकनाट्य-शिल्प का मिला-जुला प्रयोग किया है। हिन्दी नाट्य साहित्य में यह अपने ढंग का अकेला प्रयोग है। अभिनव लचीला रंग-शिल्प, संगीत, लोककथाओं और लोकगीतों का प्रयोग, पैने संवाद तथा व्यंग्य और विडम्बना का प्रखर स्वर उनके नाटकों की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाट्य साहित्य में मणि मधुकर अपनी प्रयोगशीलता के कारण हमेशा चर्चा के विषय रहे। परन्तु आश्चर्य की बात है कि ऐसे प्रयोगशील और बहुचर्चित नाटककार पर अनुसंधनात्मक कार्य कुछ भी नहीं हुआ है। अतः नाटक के क्षेत्र में पूरी तरह से समर्पित किंतु शोधकर्ताओं द्वारा उपेक्षित इस लोकधर्मी और प्रयोगधर्मी नाटककार का तथा उसके प्रतिनिधि नाटकों का अनुशीलन करना हमारा प्रमुख मंतव्य है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध छह अध्यायों में विभाजित है -

अध्याय : 1 प्रस्तुत अध्याय का नामकरण **"विषय-प्रवेश"** है, जिसमें प्रयोग : अर्थबोध एवं अर्थविस्तार, प्रयोग का स्वरूप, प्रकृति, प्रयोग और प्रयोगधर्मिता, परंपरा और प्रयोग, समाजगत प्रयोग, संस्कृत नाटक में प्रयोग, पाश्चात्य नाटक में प्रयोग तथा स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक साहित्य के असंगत नाट्य-प्रयोग, लोकनाट्य प्रयोग, शिल्पगत प्रयोग एवं विभिन्न वस्तुगत प्रयोगों पर समुचित प्रकाश डाला गया है। साथ ही साथ मणि मधुकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की चर्चा करते हुए उनके नाटकों की अवधारणा पर संक्षिप्त प्रकाश डालकर शोध-कार्य की दिशा का संकेत दिया है।

ाय : 2 प्रस्तुत अध्याय "मणि मधुकर के नाटकों में असंगत नाट्य-शैली-प्रयोग" के नाम से अभिहित है, जिसके अंतर्गत असंगत और विसंगत शब्द-प्रयोग, असंगत नाटक : परिभाषा और स्वरूप, हिन्दी के असंगत नाटककार और उनके नाटक आदि की चर्चा करते हुए मणि मधुकर के असंगत नाटकों में चित्रित विसंगत जीवन-बोध के विविध आयामों पर प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त व्यंग्य-बोध के विभिन्न आयामों पर भी सोदाहरण चर्चा की गई है।

अध्याय : 3 प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक "मणि मधुकर के नाटकों में लोक-नाट्य-शैली प्रयोग" रखा गया है। लोकनाट्य के प्रकार, हिन्दी में लोक-नाट्य परम्परा आदि पर प्रकाश डाला है। इसके साथ ही साथ मणि मधुकर के नाटकों में चित्रित लोक-नाट्य-शैली का विवेचन-विश्लेषण करने के लिए उनके नाटकों में प्रयुक्त लोक-कथाओं का प्रयोग, लोक-जीवन-अभिव्यक्ति प्रयोग लोक-गीत प्रणाली प्रयोग पर भी समुचित प्रकाश डाला है।

अध्याय : 4 प्रस्तुत अध्याय को "मणि मधुकर के नाटकों में शिल्पगत प्रयोग" संज्ञा दी गई है। इस अध्याय में मणि मधुकर के नाटकों में प्रयुक्त वस्तुविन्यास प्रयोग, चरित्र-सृष्टि के विविध प्रयोग, भाषा-शिल्पगत प्रयोग, प्रतीक

प्रयोग एवं शीर्षकों के अभिनव प्रयोग आदि पर विचार करते हुए मणि मधुकर की शिल्पगत विशिष्टता प्रतिपादित की गई है।

अध्याय : 5 प्रस्तुत अध्याय का नामकरण "मणि मधुकर के नाटकों में रंगमंचीय प्रयोग" किया गया है, जिसके अन्तर्गत मणि मधुकर के नाटकों में दृश्यबंधगत प्रयोग, अभिनय संबंधी प्रयोग, प्रकाश-योजना के अभिनव प्रयोग तथा ध्वनि एवं संगीत के औचित्यपूर्ण प्रयोग आदि पर समुचित प्रकाश डाला गया है। अभिनय संबंधी प्रयोग के अंतर्गत व्यक्ति-समाज-बोध परक विशिष्ट प्रयोग, मंगलाचरण के विडम्बनात्मक प्रयोग, श्रद्धांजलि का अभिनव प्रयोग, वेशान्तर के अभिनव प्रयोग, कथा-गायन का प्रयोग, नृत्य-गान के विशिष्ट प्रयोग, ढोलक नृत्य-गान प्रयोग, हास्यरस-व्यंग्य प्रयोग, मुद्राभिनय के प्रयोग, अंधकार का पात्र के लिए प्रयोग, एक पात्र-अनेक भूमिकाएँ : विशिष्ट प्रयोग आदि की चर्चा की गई है। साथ ही, रंगमंचीय प्रस्तुति और दर्शकीय-पाठकीय संवदेनाएँ भी स्पष्ट की गई है।

अध्याय : 6 "समन्वित मूल्यांकन" शीर्षक से अभिहित इस अध्याय में शोध-प्रबंध का सार निरूपित किया गया है।

प्रबंध की मौलिकता

1. मणि मधुकर के नाटकों पर फुटकल रूप में कुछ समीक्षा अवश्य लिखी गयी है, लेकिन एक सक्षम प्रयोगशील नाटककार के रूप में पहली बार ही उन पर शोध-कार्य करने का प्रयास किया गया है।

2. हिन्दी में कुछ नाटककारों ने एक तरफा शैली की दृष्टि से असंगत नाटक लिखे हैं तो कुछ नाटककारों ने एक तरफा लोक-नाट्यों की रचना की है, लेकिन मणि मधुकर ने अपने अधिकतर नाटकों में इन दोनों नाट्य शैलियों का समन्वित प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में इन दो नाट्य शैलियों पर अलग-अलग अध्याय लिखकर मणि मधुकर को प्रयोगशील नाटककार के रूप में न्याय देने की सफल कोशिश की गयी है।

3. मणि मधुकर के नाटकों के कथ्य, शिल्प, शैली और मंचीय प्रयोगों को परिलक्षित करते हुए सविस्तर विवेचन-विश्लेषण करने का यह एक मौलिक तथा सत्प्रयास है।

4. रंगमंच के विविध आयामों को विश्लेषित करने और विविध मंचीय प्रयोगों को शब्दांकित करने की दृष्टि से प्रस्तुत शोध-कार्य विशेष उल्लेखनीय है।

5. प्रस्तुत शोध-कार्य में अनुस्युत विवेचन-विश्लेषण को अधिक स्पष्ट करने के लिए सांख्यिकी, तालिकाओं तथा छायाचित्रों आदि का इस्तेमाल किया गया है।

कृतज्ञता-ज्ञापन

प्रस्तुत शोध-प्रबंध श्रद्धेय तथा वन्दनीय गुरूवर डॉ.गजानन शंकर सुर्वे, रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा (महाराष्ट्र) के आत्मीय निर्देशन में लिखा है। अपने कार्य में व्यस्त होने के बावजूद शोध-प्रबंध के विषय-चयन से लेकर उसकी संपूर्ति तक उन्होंने जिस आत्मीयता, तत्परता और तन्मयता से मौलिक मार्गदर्शन किया है, उसके प्रति शब्दों में माध्यम से कृतज्ञता व्यक्त करना मेरे लिए कठिन है। फिर भी इतना अवश्य है कि शोध-प्रबंध की पूर्ति का सारा श्रेय उन्हीं के आशीर्वचन और मार्गदर्शन का प्रतिफलन है। साथ ही साथ उन्होंने अपने निजी समृद्ध ग्रंथालय से समय-समय पर मुझे अनेक नाटक, संदर्भ ग्रंथ तथा कोश ग्रंथादि अध्ययन के लिए देकर मुझे उपकृत किया है। अतः उनके सामने श्रद्धाभाव से विनम्र होकर नतमस्तक होने में ही मैं गर्व का अनुभव करती हूँ।

प्रस्तुत शोध-कार्य में गुरूपत्नी वात्सल्यमूर्ति श्रीमती देवलता सुर्वे भाभी, मेरे छोटे-मोटे कार्यों में समय-समय पर हाथ बँटाने वाली मेरी छोटी बहन के समान गुरूकन्या कामायनी सुर्वे, प्रा.जयवंत जाधव, श्रीमती जयप्रभा जाधव, आदरणीय गुरूवर डॉ.टी.आर.पाटील, महिला महाविद्यालय, सातारा के प्राचार्य टी.ई.शेलके और

प्राचार्य ए·एम्·वाघमारे, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के प्राचार्य अमरसिंह राणे और पुरूषोत्तम सेठ, मेरी प्रिय सहेली प्रा·श्रीमती सुरेखा चव्हाण तथा महिला महाविद्यालय, सातारा के मेरे अन्य सहयोगी आदि मुझे इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरणा देते रहें। उनकी सत्प्रेरणा और हार्दिक अनुकम्पा के लिए मैं उनकी हृदय से शुक्रगुजार हूँ।

मेरे पति श्री·अल्ताफ इस्माईल पठाण जिन्होंने मुझे शोध-प्रबंध का कार्य पूरा करने की प्रेरणा दी और अपने कार्य में व्यस्त होते हुए भी मेरी मदद की इसीलिए मैं उनकी अधिक शुक्रगुजार हूँ।

शोधकार्य में मेरी सहायता करने वाले उपर्युक्त लोगों के अतिरिक्त मुझे अधिक से अधिक पढ़ाने की जिद रखने वाले मेरे पूज्य पिताजी श्री·अ·मज्जीद फरीद शेख और स्नेहशील माँ जेबुनिस्सा अ·मज्जीद शेख तथा मेरे श्वशुर श्री·इस्माईल पठाण, माँ समान सास श्रीमती बिस्मील्ला पठाण, बहन श्रीमती सुलताना मुल्ला, बहनोई श्री·महंमदअली मुल्ला, मेरी प्रिय ननदें और ननदोई तथा परिवार के अन्य सदस्यों ने भी इस शोध कार्य के लिए मेरी मदद की है।

मेरे अध्ययन के लिए समय-समय पर मुझे संदर्भ ग्रंथ ढूँढकर देने वाले लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के ग्रंथपाल श्री·एस·ई·जगताप और ग्रंथालय के अन्य कर्मचारी आदि के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ। प्रबंध-लेखन के लिए जिन संदर्भ-ग्रंथों का मैंने उपयोग किया है, उन सभी संदर्भ-ग्रंथों के लेखकों के धन्यवादार्थ मेरे पास शब्द नहीं है। अतः मैं उनके ऋण में ही रहना पसन्द करूँगी। अंत में आत्मीयता और तत्परता से सुचारू रूप में प्रबंध का टंकन-लेखन करने वाले श्री·मुकुन्द ढवले और उनके सहायक श्री·सुशीलकुमार कांबले और श्री·राजेन्द्र कुलकर्णी की अमूल्य सहायता के लिए मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगी।

R. Shaikh.

(श्रीमती रुक्साना अ·मज्जीद शेख)

115, बुधवार पेठ,
सातारा·
पिन - 415 002
महाराष्ट्र